मेहनतकशों का पैग़ाम
मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com
Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 2022007062

बैप्टिस्ट चर्च की जमीन फर्जी डाक्यूमेंट्स पर लैंड माफिया द्वारा हथियाना 2
नशे के खिलाफ दो दिवसीय प्रेरणा कार्यक्रम में रूपरेखा हुई तैयार 4
कश्मीर: इतिहास का तोड़ना-मरोड़ना शांति की राह में बाधक 5
पूरी की पूरी शिक्षा मोदी सरकार के निशाने पर है 6
मेडिकल छात्रों से 300 करोड़ कमाने के चक्कर में फंस गये खट्टर 8

वर्ष 37 | अंक 1 | फरीदाबाद | 20-26 नवम्बर 2022 | फोन-8851091460 | ₹ 5.00

पलवल में झूठ बेच गये गवर्नर दत्तात्रेय

बेहद लचर सेवाओं के बावजूद राज्य को चिकित्सा का हब बताया

पलवल (म.मो.) किस्मत ने पलटा मारा तो संघ प्रचारक से केन्द्रीय मंत्री और फिर हरियाणा के गवर्नर बने बंडारू दत्तात्रेय। वे 14 नवम्बर को झूठा प्रचार करने पलवल के गांव बघोला आ पहुंचे, साथ में आये छत्तीसगढ के पूर्व राज्यपाल शेखर दत्त तथा भाजपा सांसद कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौर। यहां उन्होंने सत्य साईं संजीवनी नामक एक व्यापारिक अस्पताल का उद्घाटन किया। प्रबन्धकों ने अस्पताल का नाम भी संघ की साम्प्रदायिक विचारधारा के अनुरूप ही रखा है। इससे कुछ दिन पहले दिनांक 24 अगस्त को प्रधानमंत्री मोदी ने भी ऐसे ही एक साम्प्रदायिक व्यापारिक अस्पताल का फरीदाबाद में उद्घाटन किया था।

इस तरह के उद्घाटनों से आम जनता को तो कोई लाभ होता नहीं है; हां, चिकित्सा व्यापारियों का कद जरूर बढ़ जाता है। इससे उनके अस्पताल पर एक तरह की सरकारी मुहर सी लग जाती है और प्रचार भी अच्छा-खासा हो जाता है जिसके चलते इन्हें ग्राहक फांसने में काफ़ी सुविधा होती है। प्रधानमंत्री द्वारा अम्मा के अस्पताल का उद्घाटन किये जाने से व्यापक प्रचार के साथ-साथ जन साधारण में यह धारणा भी बन गई कि मोदी ने उद्घाटन किया है तो यहां इलाज भी मुफ्त ही होता होगा। लेकिन यहां के रेट किसी भी अन्य व्यापारिक अस्पताल से कम नहीं है। मोदी ने भी यह उद्घाटन कोई मुफ्त में नहीं किया है, पूरे 113 करोड़ वसूले थे। उनके आने पर जनता की जो ऐसी-तैसी हुई वो अलग से।

मोदी हो या दत्तात्रेय इन मौकों पर संघ में सीखी अपनी भाषण एवं झूठ बोलने की कला का खुल कर प्रयोग करते हैं। इसके साथ-साथ अपने द्वारा उद्घाटित व्यापारिक अस्पतालों को भी सरकार अपनी उपलब्धियों में गिनाना नहीं भूलती। बघोला में बोलते हुए दत्तात्रेय ने हरियाणा को चिकित्सा का हब तक कह डाला। यह कैसा हब है जहां के बीके अस्पताल अथवा पलवल के सिविल अस्पताल में न तो पर्याप्त डॉक्टर व अन्य स्टाफ़ है और न ही आवश्यक उपकरण व दवायें आदि हैं। इन अस्पतालों से रेफ़र-रेफ़र का खेल खुल कर खेला जा रहा है। व्यापारिक अस्पतालों के दलाल सदैव यहां शिकार घेरने में जुटे रहते हैं। इस काम में कई डॉक्टर व अन्य स्टाफ भी शामिल रहते हैं। स्वास्थ्य केन्द्रों व ईएसआई डिस्पेंसरियों की दुर्दशा का तो कहना ही क्या।

झूठ बोलकर जनता को बहकाने में माहिर संघी प्रचारक की भूमिका निभाते हुए गवर्नर दत्तात्रेय ने कहा कि 2014 में आठ मेडिकल कॉलेज से बढकर राज्य में 12 हो गये हैं। अब कोई पूछे इनसे कि इनके बढने में संघी सरकार का क्या योगदान है ? सर्वविदित है कि राज्य सरकार द्वारा संचालित केवल चार मेडिकल कॉलेज (रोहतक, खानपूर, करनाल, नूह) हैं। ये सभी तो 2014 से पहले बन कर चालू हो चुके थे। पांचवा मेडिकल कॉलेज छांयसा में चलाने का जो प्रयास हरियाणा सरकार कर रही है, पता नहीं कैसा चल पायेगा ? उक्त चार मेडिकल कॉलेज भी चलने की बजाय बस घिसट भर ही रहे हैं। इन्हें चलाने के लिये भी खट्टर सरकार मेडिकल छात्रों से वसूली करने की फिराक में हैं जिसे लेकर राज्य भर के मेडिकल छात्रों में भारी रोष चल रहा है। इसके चलते नई दाखिला प्रक्रिया भी ठप्प हुई पड़ी है।

अपनी सरकार की पीठ थपथपाते हुए दत्तात्रेय ने बताया कि मेडिकल छात्रों की

सीटें 850 से बढ़कर इन आठ सालों में 1735 हो गई हैं। इन सिटों की बढोतरी के लिये राज्य सरकार ने कौन से पत्थर फोड़े थे, यह गर्वनर महोदय ने नहीं बताया। दरअसल सरकार ने एक फरमान जारी करके 100 सीटों वाले मेडिकल कॉलेजों को 150 सीटों वाला बना दिया। लेकिन इस बढोतरी के लिये जिस इनफ्रास्ट्रक्चर की आवश्यकता थी उसकी ओर जरा भी ध्यान नहीं दिया गया। यहां तक कि इन छात्रों के लिये आवश्यक हॉस्टल तक की भी कोई व्यवस्था नहीं की गई थी।

कहावत है कि सच जब तक अपने जूते पहनता है तब तक झूठ पूरी दुनियां का चक्कर लगा आता है। दत्तात्रेय जी तो झूठ के पकौड़े तल कर चले गये अब समझाते रहो जनता को कि वे कैसे उन्हें बहका गये।

जनता को बेवकूफ बनाने के लिये ख्याल अच्छा है

अस्पतालों से इलाज न करा सकी, टेलिमेडिसिन से करायेगी सरकार

फ़रीदाबाद (म.मो.) बिना कोई फ़ली फोड़े सुर्खियों में छाये रहने के लिये हरियाणा की खट्टर सरकार ने मीडिया द्वारा प्रकाशित कराया है कि वह ग्रामीण स्तर तक के मरीज़ों को बेहतरीन चिकित्सा सेवायें उपलब्ध कराने के लिये टेलीमेडिसिन सेवा शुरू करने जा रही है। सरकार के मंत्री-संत्री तो छींक आने पर गुड़गाव स्थित पंचतारा मेदांता अस्पताल में आकर दाखिल हो जाते हैं। आम जनता के लिये वे टेलिफ़ोन एवं इंटरनेट के माध्यम से 'बेहतरीन' चिकित्सा सेवायें दिलवायेंगे।

मीडिया में प्रकाशित समाचारों के अनुसार राज्य भर के तमाम प्राथमिक एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों के साथ-साथ ज़िला अस्पतालों को भी टेलीमेडिसिन पद्धति के द्वारा रोहतक मेडिकल कॉलेज से जोड़ा जायेगा। इसके लिये एक विशेष सॉफ्टवेयर ऐप तैयार किया जायेगा। इसके माध्यम से उक्त तमाम छोटे-बड़े स्वास्थ्य केन्द्र रोहतक मेडिकल कॉलेज से जुड़ जायेंगे। इस पद्धति द्वारा गंभीर से गंभीर मरीजों को रोहतक मेडिकल कॉलेज में तैनात विशेषज्ञ डॉक्टरों द्वारा इलाज की सुविधा मिला करेगी। कितना सुन्दर विचार है खट्टर महोदय का! उन्हें कितनी चिन्ता रहती है अपनी प्रजा की! न अस्पताल खोलने की जरूरत, न डॉक्टरों व स्टाफ के वेतन पर पैसा बर्बाद करने की जरूरत और न ही दवायें व उपकरण आदि की खरीद पर पैसा लुटाने की जरूरत! बस सारी जनता का इलाज टेलीमेडिसिन से हो जायेगा।

सुधी पाठकों ने **'मज़दूर मोर्चा'** में पढ़ा होगा कि रोहतक मेडिकल कॉलेज में 200 पद तो केवल असिस्टेंट प्रोफेसरों के खाली पड़े हैं। इनके अतिरिक्त सैंकड़ों की संख्या में अन्य विभिन्न पद भी खाली पड़े हैं। वहां मौजूद डॉक्टरों के बाहर इतनी लम्बी लाइने लगी रहती हैं जिन्हें वे दिन भर में निपटा भी नहीं सकते। इतने पुराने मेडिकल कॉलेज से भी हर रोज सैंकड़ों मरीज या तो अस्पताल द्वारा बाहर रेफर किये जाते हैं या समझदार लोग स्वत: ही अन्य अस्पतालों की ओर हो लेते हैं। इन परिस्थितियों से आंखें मुंद कर खट्टर महोदय पूरे राज्य भर के मरीजों का इलाज इन विशेषज्ञ डॉक्टरों से कराने का जो छलावा कर रहे हैं, वह साफ़ नजर आ रहा है।

प्रकाशित समाचारों में कहा गया है कि छलावा भरी इस योजना के लिये ई-संजीवनी नामक ऐप का सॉफ्टवेयर तैयार कराया जायेगा। इसी योजना के तहत बड़े पैमाने पर कम्प्यूटर एवं लैपटॉप खरीदे जायेंगे। इन्टरनेट आदि की व्यवस्था की जायेगी। जाहिर है कि इस पर करोड़ों रुपया खर्च किया जायेगा जिसका परिणाम निल बटा सन्नाटा होगा। हां, इसकी प्रस्थापना पर जो खर्च होगा उससे सम्बन्धित लोगों को ठीक-ठाक मुनाफ़ा हो जायेगा। बहुत दूर जाने की जरूरत नहीं, कुछ वर्ष पहले ही शिक्षा विभाग के लिये भी ऐसी ही एक हवाई योजना, 'एजुसेट' तैयार की गई थी। इसके अनुसार चंडीगढ़ से ही एक मास्टर जी सारे राज्य के बच्चों को पढ़ा देने वाला था। इसके लिये बड़े पेमाने पर, अरबों रुपये के कम्प्यूटरों के साथ-साथ निर्वाध बिजली आपूर्ति के लिये स्कूलों में डीजल जनरेटर सेट भी रखवाये गये थे। आज न तो अरबों रुपये के कम्प्यूटरों, जनरेटर सेटों व अन्य साजो-सामान का कोई अता-पता है और न ही एजुसेट नामक चिड़िया का। कहां उड़ गई ? देर-सवेर यही हश्र खट्टर की टेलीमेडिसिन का होने वाला है।

खट्टर जी रोहतक मेडिकल कॉलेज से जुड़ने की बात करते हैं, गवर्नर दत्तात्रेय जब राज्य में 12 मेडिकल कॉलेज होने की बात करते हैं तो सारा बोझ अकेले रोहतक पर ही क्यों डाला जा रहा है ? जाहिर है कि खट्टर के आधीन आने वाले पांच मेडिकल कॉलेज ही उनकी ताबेदारी कर सकते हैं, अन्य तो कोई हाथ भी न रखने दे। सरकारी पांच कॉलेजों में से रोहतक ही एक ऐसा मेडिकल कॉलेज है जिसकी स्थिति कुछ बेहतर है, बाकियों का तो और भी बुरा हाल है। खट्टर की योजना के अनुसार मेडिकल कॉलेज से सीधे जुड़ने की बजाय ग्रामीण स्वास्थ्य केन्द्रों को, पहले ज़िला अस्पतालों से जोड़ा जायेगा। इन अस्पतालों का एक नमूना बीके अस्पताल है। इससे भला कोई टेलीमेडिसिन के माध्यम से क्या इलाज करा लेगा जिसके यहां पहले ही मरीज़ टकराते फ़िर रहे हैं।